सम्पादक के नाम

क्या सरकार के अन्यायपूर्ण, झूठी और ग़ैरज़िम्मेदार होने की, गिरने की कोई हद भी होती है? पाखंड का एक उदाहरण!

22 अगस्त 2017 - हरयाणा सरकार का मेरे लिए तबादला आदेश : ओएसडी, लैंड यूज़ बोर्ड के नवसृजित पद पर ।

13 अक्तूबर 2017 को चीफ़ सैक्रेट्री/हरियाणा सरकार से 6 सार्वजनिक सूचनाएँ माँगी गयीं-

(एक) लैंड यूज़ बोर्ड के परिगठन की अधिसूचना
(दो) बजट 2014-2015 से लेकर आज तक सालाना आंबटन
(तीन) आहरण और वितरण प्राधिकारी बाबत सूचना
(चार) ओएसडी/विभागाध्यक्ष के प्राधिकार, प्रकार्य/कर्त्तव्यों बाबत जानकारी
(पाँच) बोर्ड के अमलेबाबत जानकारी (कितने-कौन?)
(छः) बोर्ड के दफ़्तरभवन का पता और वहाँ का फोननम्बर?

7 फरवरी 2018 को सरकार का लिखित जवाब-

(एक) अधिसूचना दिनांक 21 9 2004 की प्रति।
(दो) शून्य : कोई बजट नहीं।
(तीन) शून्य : कोई बजट को संचालित करनेवाला और तनखूवाह निकालनेवाला नहीं।
(चार) शून्य : कोई विभागाध्यक्ष/ओएसडी नहीं।
(पाँच) शून्य : कोई अमला/स्टाफ़र्स नहीं।
(छः) शून्य : कहीं कुछ नहीं। न कार्यालय, न फोन, न पता। सब लापता।

22 अगस्त 2017 को कोई पद/विभाग नवस्वीकृत नहीं किया गया था, न प्रशासनिक/मन्त्रिमंडल के स्तर पर और न ही वित्त विभाग की हामी के साथ, और एक अश्लील, गंदा खड़ा झूठ बोलकर ट्रान्सफ़र का वह आदेश निकाल दिया गया था, इसको भी दस्तावेज़ प्रदान करते हुए ख़ुद सरकार ने स्वीकार किया है।

बहुत बाद में 22 अगस्त 2017 की तारीख़ में मीटिंग दिखाकर यह भी कहा गया कि यह पदस्थापन लोकप्रशासन की दृष्टि से अत्यावश्यक (administrative exigency) था और जनता के फ़ायदे के लिये (in public interest) किया जाना आवश्यक था!!

× **प्रदीप कासनी**

मोदी जी द्वारा इस्लामिक विरासत का बखान..... आयोध्या झाँकी है , 8 और बाकी हैं.....

जार्डन के किंग के भारत आगमन पर विज्ञान भवन में मोदी जी ने एक नए अंदाज में भाषण दिया और चार साल में पहली बार मुसलमान और भारत मे इस्लामिक विरासत उन्हें याद आई। क्या मोदी जी आरएसएस के हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा की जगह भारत की गंगा - जमुनी तहजीब में यकीन करने लगे हैं ? क्या उनका हृदय परिवर्तन हो गया है ? इस मुद्दे पर बात करने से पहले आज की ही एक और महत्वपूर्ण न्यूज़ पर ग़ौर करते हैं। शिया वक़्फ़ बोर्ड के अध्यक्ष वसीम रिज़वी ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को चिट्ठी लिखी है कि आयोध्या के अलावा अन्य 8 जगहें है जहाँ मंदिर को तोड़कर मस्ज़िद का निर्माण किया गया है इसलिए उन जगहों को हो हिन्दुओ को दे देना चाहिए।

फिर क्या था इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दिन भर कार सेवा करता रहा। मैं इस मुद्दों पर बात नही कर रहा हूँ कि कौन सी जगह हिन्दुओ की है और कौन सी मुसलमानों की। मैं तो सिर्फ ये बताना चाह रहा हूँ कि बीजेपी 2019 के लिए क्या - क्या नही कर रही है? आज घाटी दोनो घटनाएं मात्र इत्तेफ़ाक नही है बल्कि सोंची समझी रणनीति है आरएसएस की।

छोटका (नीरव) मोदी से शुरू हुआ बैंकिंग घोटाला रोज अलग - अलग बैंको में नए परते खोल रहा है। जिससे बीजेपी सरकार को काफी राजनीतिक नुकसान हो रहा है। इन मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिये कुछ नया करने की ज़रूरत थी।इसलिय एक मंच से मोदी जी मुस्लिम प्रेम के दोगली गीत गाते हैं, तो दूसरी तरफ शिया और सुन्नी को आमने सामने खड़ा कर मंदिर -मस्जिद के 8 अन्य मोर्चे खोल दिये जाते हैं। जिससे कि आने वाले समय में नए मोर्चो पर चुनाव लड़ा जा सकें।

आरएसएस के किचन में बने स्वादिष्ट राजनीतिक पकवानों को मीडिया बड़े ही शिद्दत से जनता को परोस रहा है। मीडिया पूरी तरह से मूल मुद्दों को छोड़ मोदी जी के प्रवक्ता और प्रोपेगैंडा अधिकारी के रूप में काम कर रहा है।

- शकीब रहमान

कहीं त्रिपुरा का हाल कश्मीर जैसा न हो!

त्रिपुरा में भाजपा का स्वतंत्र आधार नहीं रहा है। फिर भी वह क्यों जीत गई? कारण बड़ा साफ है। पहले वह सत्ता के भूखे कांग्रेस व तृणमूल कांग्रेस के विधायकों को तोड़कर अपने साथ लाई। फिर उसने आदिवासियों के स्थानीय संगठन, इनडिजेनस पीपल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (आईपीएफटी) को बहका लिया। त्रिपुरा में आदिवासियों के लगभग 35 प्रतिशत वोट हैं और इस बार एकमुश्त भाजपा गठजोड़ को पड़े हैं। यह अलग बात है कि इस गठजोड़ में 51 सीटें भाजपा ने खुद हड़प लीं, जबकि केवल नौ सीटें ही भोले-भाले आदिवासियों के संगठन आईपीएफटी को दी हैं।

सबसे खतरनाक बात यह है कि आईपीएफटी सालोंसाल से त्रिपुरा के विभाजन के लिए संघर्ष करता रहा है। उसने आदिवासियों के लिए अलग तिप्रालैंड की मांग पर ही सारी गोलबंदी की है। अखंड भारत की बात करनेवाली भाजपा का राजनीतिक अवसरवाद इसी से साफ हो जाता है कि उसने त्रिपुरा में चुनावी जीत के लिए इस अलगाववादी संगठन से भी हाथ मिलाने में परहेज नहीं किया।

खैर, त्रिपुरा में लेफ्ट से सरकार छीनने का उसका मंसूबा अब पूरा हो गया है।

आशंका इसी बात की है कि कहीं त्रिपुरा का हश्र भी कश्मीर जैसा न हो जाए क्योंकि आईपीएफटी को अपने जनाधार को खुश करने के लिए कुछ तो करना पड़ेगा। अन्यथा, अब तक शांत रहे सीमावर्ती राज्य त्रिपुरा में कश्मीर की पीडीपी-भाजपा सरकार के जैसे तनाव के बीच आदिवासियों का उबाल ज़ोर मार सकता है।

- अनिल सिंह

डूबने वाला है मोदी सरकार का अडानी को दिया 6200 करोड़ का लोन

मोदी सरकार ने अडानी को दिया था जनधन का पैसा, ऑस्ट्रेलिया में किया था अडानी ने इन्वेस्ट, ऑस्ट्रेलिया ने पूरी योजना को ही किया रद्द।

अडानी ने ऑस्ट्रेलिया में भी की थी नियमों की अनदेखी, इसलिए प्रोजेक्ट फंसे अधर में

गिरीश मालवीय

ऑस्ट्रेलिया में अडानी को कारमाइकल खदान के प्रोजेक्ट में बहुत बड़ा नुकसान होने जा रहा है।अडाणी समूह ऑस्ट्रेलिया में कोयला खदान, रेलवे और बंदरगाह परियोजना पर अरबों डॉलर से अधिक का निवेश कर चुका है।

उसे इस प्रोजेक्ट के लिए मोदी जी ने भारतीय स्टेट बैंक से 6200 करोड़ का लोन दिलवाया था और वह भी तब जब 6 अंतरराष्ट्रीय बैंकों ने इस प्रोजेक्ट को पर्यावरण को खतरा बताते हुए फाइनेंस करने से मना कर दिया। यह विदेशी धरती पर किये जाने वाले प्रोजेक्ट के लिए आज तक का सबसे बड़ा लोन था

जिस वक्त यह लोन दिलवाया गया था, उसी वक्त जन धन योजना भी शुरू की गयी थी और उसी में जमा पैसों से स्टेट बैंक से यह लोन दिया है, जो अब डूबने की कगार पर आ गया है।

दरअसल, अडाणी की रेललाइन परियोजना के तहत ऑस्ट्रेलिया में उसकी कारमाइकल खदान से लेकर ऐबट प्वाइंट स्थित अडाणी के स्वामित्व एवं उसके द्वारा परिचालित थोक कोयला लदान प्रतिष्ठान तक करीब 400 किलोमीटर लंबी रेल लाइन बिछाने की योजना थी, जिसके वित्त पोषण के लिए चीन के 2 सबसे बड़े सरकारी बैंकों ने लोन देने से मना कर दिया था।

बैंक का दावा है कि वह ग्रीन फाइनेंसिंग के लिए प्रतिबद्ध है और इसे अहमियत देता है। अन्य अंतरराष्ट्रीय बैंक और वित्तीय संस्थान पहले ही लोन देने से मना कर चुके हैं। अडानी को आखिरी उम्मीद आस्ट्रेलिया की सरकार से थी। 4 फरवरी को ऑस्ट्रेलिया की सरकार ने भी 400 किलोमीटर लंबी रेल लाइन के प्रोजेक्ट को फाइनेंस करने से साफ इंकार कर दिया है।

इस निर्णय को ऑस्ट्रेलिया में अडानी के प्रोजेक्ट के लिए ताबूत में आखिरी कील माना जा रहा है। भारत में अडानी का विभिन्न बैंकों का करीब 96,0×1 करोड़ का लोन बाक़ी है।

यह प्रोजेक्ट यदि डूबता है तो भारत पूरे देश की अर्थव्यवस्था ही खतरे में आ जायेगी, क्योंकि अनिल अंबानी के रिलायंस ग्रुप पर भी लगभग 1,21,000 करोड़ का बैड लोन है और चाइना डेवेलपमेंट बैंक ने अनिल अंबानी की कंपनी आर-कॉम के खिलाफ इन्सॉल्वेंसी का केस दर्ज करा दिया है।

रूइया के एस्सार ग्रुप की कंपनियों पर 1, 01,461 करोड़ का लोन बक़ाया है, जिसे वसूलने के असफल प्रयास किये जा रहे हैं। इन तथ्यों के आलोक में आप नीरव मोदी के पीएनबी घोटाले को रखकर देखिए, तो आप समझ जाएंगे कि भारतीय अर्थव्यवस्था की वास्तविक हालत क्या है।

आलेख

हिमांशुकुमार

चाहे जो भी हो, है सच्चा सौदा... बात पकड़ो...

कल अपने चाचा जी के पास बैठा था। वो पुराने क़िस्से सुनाने लगे।

चाचा जी ने मुझे बताया कि सन चालीस के लगभग की बात है, एक बार तेरे दादा जी मुज़फ़्फ़रनगर में घर के सामने बैठे थे, तभी दुल्ला कसाई एक लंगड़ी गाय लेकर जा रहा था, हमारे घर की भैंस कुछ दिन पहले मर चुकी थी, घर में दूध की दिक़्क़त थी, दादा जी ने आवाज़ लगाकर कहा - अरे कितने में लाया भाई इस गाय को?

दुल्ला ने कहा - जी, दस में लाया। दादा जी ने कहा - ले, ग्यारह रुपये मुझ से ले ले, और गाय यहाँ बांध दे।

कुछ महीनों की खिलाई-पिलाई से गाय बिल्कुल स्वस्थ हो गई, फिर वह ग्याभन हुई और दस लीटर दूध देने लगी। मैंने चाचा जी से पूछा - क्या तब गाय काटने पर हिन्दु कोई झगड़ा नहीं करते थे?

चाचा जी ने बताया - झगड़े का कोई सवाल ही नहीं था, ये उनका खाना था वो खा सकते थे। हिन्दु कसाई भी थे, वो %खटीक% कहलाते थे। मुस्लिम लीग का हॅड ऑफ़िस मुज़फ़्फ़रनगर था, उनका चुनावचिन्ह बेलचा था, लोग उन्हें %बेलचा पार्टी% कहते थे, तो उस गाय ने बछिया को जन्म दिया, घर में सफाई के लिये आनेवाली जमादारिन ने हमारी दादी से कहा - चाची जी, ये बछिया मुझे दे दीजिये, दादी ने कहा - खोल ले और ले जा, वो बछिया वहाँ उनके घर पर ब्याह गई और एक दिन में पन्द्रह लीटर दूध देने लगी।

एक दिन मैं और अब्बा जी शामली अड्डे से घर की तरफ़ आ रहे थे, हमारे सब से बड़े ताऊ जी को पूरा शहर %अब्बा जी% के नाम से जानता था, अब्बा जी वक़ील थे, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे, उनके मुंशी मुसलमान थे, उनका बेटा हमारे ताऊ जी को अब्बा जी बोलता था, उनकी देखादेखी घर के सारे बच्चे उन्हें अब्बा जी कहने लगे। रास्ते में अब्बा जी को जमादारिन ने रोक लिया, और बोली - पन्डत जी जो बछिया आप से लाई थी उसका दूध पी के जाओ।

मैंने उत्सुकतावश पूछा - क्या अब्बा जी ने वहाँ दूध पिया?

चाचा जी ने बताया - हाँ, वो गांधी जी का ज़माना था, आज़ादी की लड़ाई में लगे लोगों के लिये जातपात और हिन्दु-मुसलमान का भेदभाव मिटाने का बहुत जोश था।

चाचा जी आगे सुनाते रहे - सन् पचपन की बात है, मुझे ऊन का कताई केन्द्र शुरु करने के लिये रुड़की के पास मंगलोर भेजा गया, वहाँ पास में एक मुसलमानों का गाँव था, गाँव में बस एक हिन्दु बनिया था जो दुकान चलाता था, गाँव के प्रधान एक मुस्लिम थे, मुस्लिम प्रधान ने चाचा जी से कहा - पंडत जी, कहो तो आपके रहने-खाने का इन्तज़ाम बनिये के यहाँ करवा दूँ? मैं तो मुसलमान हूँ। चाचा जी ने कहा - आप मेरे बड़े भाई जैसे हैं, मुझे आपके घर पर रहने-खाने में कोई आपत्ति कैसे हो सकती है?

चाचा जी वहाँ छह महीना रहे, गूजरों के गांव में जाकर भेड़ की ऊन खरीदना और उसे गांव की महिलाओं से चर्खे पर कतवाना और उससे कंबल बनवाना उनका काम था। केन्द्र शुरु करने के छह माह बाद उनका शुरुआती काम पूरा हुआ, गाँव छोड़ते समय चाचा जी ने अपने मुस्लिम मेज़बान से हाथ जोड़कर कहा - भाई साहब, मेरे रहने-खाने का पैसा ले लीजिये, गाँव के उस मुस्लिम प्रधान ने कहा - पंडत जी, आपने मेरी गाँव की महिलाओं को रोज़गार दिया, मेरे गाँव के लोगों की ख़िदमत करी और मुझे बड़ा भाई कह रहे हो, बताओ मैं अपने छोटे भाई से पैसे कैसे ले सकता हूँ?

बताते हुए नब्बे साल के मेरे चाचा जी अपनी आँखों में भर आया, पानी पोंछने लगे थे, मुझे उस समय के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सामाजिक-राजनैतिक माहौल की एक झलक मिली जिसे साझा करने का लोभ मैं रोक नहीं पाया, और आपके साथ बाँट रहा हूँ।

बिका हुआ, डरा हुआ मीडिया क्यों नहीं पूछता!

राजीव रावल

कैसे न्यायाधीश लोया मर गए, कार के अंदर हरेन पांड्या को गोली मार दी गई थी और कार में खून की बूंद नहीं थी, गोधरा में होने वाली घटना के बारे में मोदी को कैसे पता था? कैसे, सोहराबुद्दीन की हत्या हुई और धरती कौसर बी कैसे गायब हो गई, कैसे इशरत जहां मर गई, नीरव मोदी ने नोटबंदी के कुछ घंटे पहले 90 करोड़ रुपये बैंक में जमा कराए, कैसे 12,636 करोड़ रुपए का घोटाला तोड़ने से पहले छोटा मोदी अपने पूरे परिवार को भारत से बाहर ले जाने में कामयाब रहा?

कैसे विजय माल्या बच गया, ललित मोदी ने खुद को कैसे बचा लिया, कैसे अनिल अंबानी की रिलायंस डिफेंस जैसी एकदम नई कंपनी को राफेल सौदे में 35,000 करोड़ रुपए का ऑफसेट अनुबंध मिला? सरकार उत्पादन मूल्य से 177 प्रतिशत मार्कअप पर पेट्रोल और डीजल कैसे बेच रही है, कैसे न्यायाधीश लोया के फोन ने नागपुर से लातूर तक 500+ किलोमीटर की यात्रा की और स्वयं बहेती के हाथों पहुंचे और सभी रिकॉर्ड साफ कर दिए गए?

कैसे जय शाह ने 50,000 रुपए की पूंजी को 80 करोड़ रुपए के कारोबार तक पहुंचा दिया, 13,000 करोड़ के डिस्क्लोज़र के साथ महेश शाह को कैसे टीवी स्टूडियो के अंदर से गिरफ्तार किया गया और फिर से कभी नहीं सुना? आखिर 500/1000 नोटों की जगह 2000 रुपए के नोट लाकर कैसे कालाधन खत्म होगा?

टाटा नैनो कार के लिए रतन टाटा को कैसे 30,000 करोड़ रुपए की सब्सिडी दी गई है, गौतम अडानी को कौडियों के दाम पर पर हज़ारों एकड़ जमीन क्यों दी गई?

अरुण जेटली ने 16000 रुपए प्रतिदिन के किराये पर लैपटॉप और प्रिंटर लिया और 400 करोड़ रुपए की परिसंपत्ति आधार बना डाला, जबकि कुछ साल पहले वे कीर्ति आजाद के कार्यालय से बाहर बैठे थे और फिएट का ओल्ड मॉडल कार थी?

केंद्र में सिर्फ 4 सालों के शासन में बीजेपी कैसे 1350 करोड़ रुपये का ऑफिस बनाने में सक्षम हो गई?